

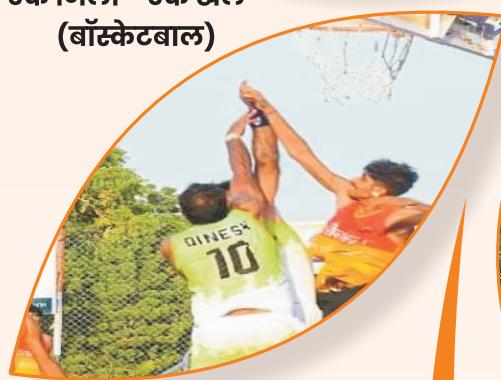


श्री भजनलाल शर्मा
मुख्यमंत्री, राजस्थान

एक जिला - एक पर्यटन स्थल
(रणकपुर जैन मंदिर)



एक जिला - एक खेल -
(बॉस्केटबाल)



एक जिला - एक उत्पाद
(कपड़े की रंगाई छपाई (टेक्स्टाइल)



एक जिला - एक उत्पाद
(मेहनदी)



एक जिला - एक वनस्पति प्रजाति
(नीम का वृक्ष)



**पंच गौरव
पाली**

जिला प्रशासन, पाली (राज.)



मुख्यमंत्री
राजस्थान

संदेश

राजस्थान को अपनी भौगोलिक विविधताओं, प्राकृतिक संपदा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां हर जिले की अपनी एक विशिष्ट पहचान है, जो वहां की उपज, हस्तशिल्प, औद्योगिक उत्पाद, खनिज संपदा और पर्यटन स्थलों में परिलक्षित होती है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने पंच-गौरव कार्यक्रम की शुरुआत की है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की क्षमता एवं विशिष्टता को पहचानते हुए उनके संरक्षण, संवर्धन तथा विकास के माध्यम से जिलों को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के तहत हर जिले में पंच गौरव के रूप में एक उत्पाद, एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल चिह्नित किया गया है। यह पहल जिलों की विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होगी और इससे आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

मुझे विश्वास है कि पंच गौरव कार्यक्रम से आमजन के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, कौशल उन्नयन, उत्पादकता में वृद्धि एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने में मदद मिलेगी। साथ ही हमारे संयुक्त प्रयासों से विकसित राजस्थान का सपना भी साकार होगा।

जिले में पंच-गौरव कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को हासिल करने में सफल हो, इसके लिए में अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूं।


(भजन लाल शर्मा)

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	पंच गौरव का नाम	पृष्ठ संख्या
1	एक जिला - एक उत्पाद (कपड़े की रंगाई छपाई (टेक्सटाइल प्रोसेस))	2 – 4
2	एक जिला - एक उत्पाद (मेहन्दी	5 – 6
3	एक जिला - एक वनस्पति प्रजाति (नीम का वृक्ष)	7 – 8
4	एक जिला - एक खेल (बॉस्टकेटबाल)	8 – 9
5	एक जिला - एक पर्यटन स्थल (रणकपुर जैन मंदिर)	10– 12

पंच गौरव : एक जिला - एक उत्पाद

[कपड़े की रंगाई छपाई (टेक्स्टाईल प्रोसेस)]



- संबंधित विभागः—** जिला उद्योग एवं वाणिज्य केन्द्र, पाली एवं रीको लि. पाली
- नोडल अधिकारी** — महाप्रबन्धक, जिला उद्योग एवं वाणिज्य केन्द्र, पाली
- पंच गौरव का संक्षिप्त परिचय** — पाली के पानी में पकके रंग मिलान के लिये आवश्यक घटक उपलब्ध हैं। पूर्व में इस उद्योग के अंतर्गत छीपा समुदाय के कुशल लोगों द्वारा हैण्ड ब्लॉक विधि से प्रिटिंग का कार्य बहुतायत किया जाता था। अतः उक्त उद्योग परम्परागत से चला आ रहा है। विगत 50 वर्षों से पाली—मारवाड़ ने खुद को कपड़ा प्रसंस्करण के लिये एक प्रमुख केन्द्र के रूप में स्थापित किया है। कलांतर में सुती कपड़ों के साथ—साथ सिंथेटिक वस्त्र का भी कार्य शुरू किया गया है। वर्तमान में पाली कपड़े की धुलाई, रंगाई, छपाई के लिये प्रसिद्ध है। वर्तमान समय में सरकारी नीतियों की मदद से टेक्स्टाईल प्रोसेस की प्रक्रिया में प्रयुक्त होने वाली मशीनों का आधुनिकीकरण होने एवं नई—नई तकनीक का उपयोग किये जाने से उक्त उद्योग को गति मिली हुई है एवं इनके उत्पाद पूरे देश में सप्लाई होते हैं एवं विदेशों में निर्यात भी किये जाते हैं।
- जिले में उपलब्धि** — पाली में उक्त उद्योग के संचालन हेतु रीको द्वारा चार औद्योगिक क्षेत्र क्रमशः औद्योगिक क्षेत्र प्रथम एवं द्वितीय चरण, औद्योगिक क्षेत्र मण्डया रोड़, औद्योगिक क्षेत्र पुनायता विकसित किये गये हैं जिनमें उक्त प्रोसेस के उद्यम कार्यरत हैं। इसके अतिरिक्त एक औद्योगिक क्षेत्र निजी क्षेत्र के मैसर्स नेक्सजेन टेक्स्टाईल पार्क में इकाईयों कार्यरत हैं। उक्त प्रोसेस से स्थानीय व प्रवासी लोगों को वृहद स्तर पर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्राप्त हो रहा है। उक्त औद्योगिक क्षेत्र में किये जा रहे प्रोसेस से होने वाले जल प्रदूषण के नियन्त्रण के लिये सीईटीपी नं. 06 क्षमता 12 एमएलडी जेडएलडी प्रक्रिया पर संचालित है एवं औद्योगिक क्षेत्र पुनायता में स्थापित सीईटीपी नं. 04 क्षमता 12 एमएलडी का जेडएलडी प्रक्रिया में अपग्रेडेशन किया जा रहा है।
- वर्तमान स्थिति** — वर्तमान समय पाली में विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों में टेक्स्टाईल प्रोसेस की लगभग 800 इकाईयों रेड / ग्रीन / ओरेंज श्रेणी की कार्यरत हैं। जिनसे प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से लगभग 50,000 व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त हो रहा है एवं वार्षिक टर्न ओवर लगभग 12000 करोड़ रूपये का है। वर्तमान में उच्च गुणवत्ता वाले प्रिण्टेड सलवार सूट, साड़ी, ड्रेस मेटेरियल, कुर्ती, प्लाजो, लेडिज पेण्ट, स्कार्फ, नाइटी, सिखों के लिये सरदार पगड़ी और रुबिया कपड़े बनाने का कार्य चल रहा है एवं पूरे भारत में उपभोक्ताओं के विभिन्न अभिसुचियों को पूरा करते हैं। खंगा—किटेंग के रूप में जाने वाले प्रिण्टेड कपड़े के लिये कई अफ्रीकी देशों की जरूरतों को पूरा कर रहे हैं। विगत वर्षों से पाली सलवार सूट, कुर्ती, प्लाजो, नाइटी आदि जैसे रेडी—टू वियर उत्पादों के लिये भी जाना जाता है। जेपीएमआईए के अन्तर्गत रोहट के पास प्रस्तावित औद्योगिक क्षेत्र में टेक्स्टाईल प्रोसेस हेतु उद्योग स्थापित किये जाने हेतु भूमि आरक्षण किया जाना उचित होगा। औद्योगिक क्षेत्र का विकास कार्य केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा त्वरित गति से किया जा रहा है। पाली मारवाड़ का सड़क—रेल सम्पर्क और कुशल कार्यबल बाजार में उक्त उद्योग की क्षमता को और आगे बढ़ाते हैं। पाली मारवाड़ में

कपड़ा उद्योग का भविष्य उज्जवल है। उक्त औद्योगिक क्षेत्र में किये जा रहे प्रोसेस से होने वाले जल प्रदूषण के नियन्त्रण के लिये सीईटीपी नं. 06 क्षमता 12 एमएलडी जेडएलडी प्रक्रिया पर संचालित है एवं औद्योगिक क्षेत्र पुनायता में स्थापित सीईटीपी नं. 04 क्षमता 12 एमएलडी का जेडएलडी प्रक्रिया में अपग्रेडेशन किया जा रहा है। कई वृहद उद्योगों द्वारा स्वयं के ईटीपी स्थापित किये गये हैं जो कार्यरत हैं। **राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना 2022 व 2024** के अन्तर्गत स्थापित होने वाले टेक्सटाइल उद्यमों को विभिन्न लाभ दिये जाने का प्रावधान है। राज्य सरकार द्वारा **टेक्सटाइल नीति—2024** जारी की गयी है जिसमें टेक्सटाइल उद्योगों को बहुतायत लाभान्वित किये जाने का प्रावधान भी किया गया है तथा Scheme for Establishment of Integrated CETPs and Upgradation of existing CETPs. भी लागू है।



6. **उपसंहार** – पाली में टेक्सटाइल उद्योग के बढाने की संभावना ज्यादा रहेगी एवं निर्यात बढ़ने से विदेशी राजस्व प्राप्त होगा एवं पाली का टेक्सटाइल उद्योग निश्चित रूप से नये आयाम स्थापित करेगा। लघु उद्योग भारती पूरे भारत में सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्योगों का बड़ा संगठन है। जयपुर और जोधपुर में इस संस्था के स्किल डवलपमेंट सेंटर कार्यरत हैं। टेस्टिंग लेब का संचालन एवं स्किल डवलपमेंट का कार्य लघु उद्योग भारती को आवंटित किया जाना उचित होगा इनके द्वारा कौशल प्रशिक्षण पश्चात प्रशिक्षणार्थी को रोजगार से जोड़ा जा सकेगा। जोधपुर पाली मारवाड़ इण्ड. एरिया के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय स्तर की आधारभूत सुविधाओं के कारण जोधपुर व पाली की कपड़ा इकाईयों के विस्तार के लिए यह क्षेत्र उपयुक्त है।

पंच गौरव : एक ज़िला - एक उपज (मेहन्दी)



1. **संबंधित विभाग:**— उद्यानिकी विभाग पाली
2. **नोडल अधिकारी** — उप निदेशक उद्यान, पाली
3. **पंच गौरव का संक्षिप्त परिचय** — मेहन्दी एक बहुवर्षीय सूखारोधी झाड़ीनुमा पौधा है। राजस्थान में इसकी खेती, पत्तियों में पाये जाने वाले रंग (1 से 2.5 प्रतिशत लासोन) के लिये की जाती है, जो कि केश रंगने और पारम्परिक साज—सज्जा में काम आता है। इसके अलावा फूलों से प्राप्त सुगन्धित तेल (इत्र) और पौधे के विभिन्न औषधीय गुण सुप्रसिद्ध हैं। राजस्थान देश में मेहन्दी पत्ती का सबसे प्रमुख उत्पादक प्रदेश है। गुजरात (बारदोली) व मध्यप्रदेश अन्य उत्पादक प्रदेश हैं। राजस्थान में पाली जिला विशेषकर सोजत क्षेत्र मेहन्दी पत्ती का मुख्य उत्पादन व व्यापारिक केन्द्र है।
4. **जिले में उपलब्धि** — राजस्थान के सोजत में उगाई जाने वाली मेहन्दी को भौगोलिक संकेत (जीआई) टैग मिला हुआ है। यह टैग मेहन्दी की अनोखी गुणवता और बेहतर मानकों को दर्शाता है। जीआई टैग मिलने के बाद, सोजत मेहन्दी की मांग घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय दोनों बाजारों में बढ़ी है।
5. **वर्तमान स्थिति** — सोजत क्षेत्र में 23704 हैक्टर एवं मारवाड़ जंक्शन में 11714 हैक्टर क्षेत्र में जो कि कुल 35418 हैक्टर क्षेत्र में व्यवसायिक खेती की जाती है। सोजत में मेहन्दी की मण्डी व पत्तियों का पाउडर बनाने तथा पैकिंग करने के लगभग 100 से 125 व्यवसायिक इकाईयां हैं। सोजत की मेहन्दी अपनी रचाई क्षमता के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध हैं। सोजत से विदेशों में बड़े स्तर पर मेहन्दी निर्यात की जाती है। अधिकारिक तौर पर अभी तक कोई उन्नत किस्म विकसित नहीं हुई है। स्थानीय फसल से स्वरूप, चौड़ी व घनी पत्तियों वाले पौधे के बीज से ही पौध तैयार कर फसल ली जा रही है। क्षेत्र

के कृषकों से चर्चा करने पर उनके द्वारा बताया गया कि वर्तमान में उनको मेहन्दी उत्पादन में मुख्य रूप से दो समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। अ— कटाई में समस्या—मेहन्दी फसल का पौधा झाड़ीनुमा होने से कटाई मजदूरों से करवानी पड़ती है जो कि काफी महंगी पड़ती है। प्रति दिवस एक मजदूर को 800–1200 रुपये का भुगतान करना होता है। ब— कटी हुई मेहन्दी के सूखने के दौरान बारिश होने पर मेहन्दी के भीगने से रंग फीका पड़ जाता है। जिसके कारण बाजार मूल्य कम आता है।



6. **उपसंहार —**

- मेहन्दी उत्पादक कृषकों के यहां उत्पादन एवं गुणवत्ता में वृद्धि हेतु प्रयास अयोजित है।
-
- इस कोष में सकल एवं काफी आय में वृद्धि होगी।

पंच गौरव : एक जिला – एक वनस्पति (नीम का वृक्ष Azadirachta indica)



1. **संबंधित विभागः—** वन विभाग पाली
2. **नोडल अधिकारी —** उप वन संरक्षक, पाली
3. **पंच गौरव का संक्षिप्त परिचय —** नीम का वृक्ष पाली जिले में बहुतायत से पाया जाने वाला वृक्ष है। यह वृक्ष सड़क मार्गों, कृषि भूमि, ओरण, गोचर, चारागाहों, सामुदायिक भवन परिसरों, धार्मिक परिसरों सहित सभी जगहों पर बहुतायत से पाया जाता है। इस वृक्ष का फल निंबोली के नाम से जाना जाता है, इसका उपयोग औषधि बनाने में उपयोग में लिया जाता है। इसकी पत्तियां घरेलू मवेशी के लिए अच्छा चारा माना जाती है एवं इसकी पत्तियों का धुंआ बारिशकाल में मच्छरों को भगाने में भी काम में आता है। इसकी शाखाएं खेतों की बाड़ बनाने में एवं ईंधन के रूप में कार्य में ली जाती है एवं इसका गोल तना ग्रामीण क्षेत्रों में टिंबर के रूप में भी प्रयोग में लिया जाता है। नीम वृक्ष का प्रत्येक भाग उपयोगी होने के कारण इसके नारायण वृक्ष या भगवान का वृक्ष भी कहा जाता है एवं इसकी विविध उपयोगिता को मध्य नजर रखते हुए ही इस वृक्ष को पाली जिले के जिला वृक्ष के रूप में चयनित किया गया है।
4. **जिले में उपलब्धि —** नीम का वृक्ष जिले में बहुतायत से पाया जाने वाला वृक्ष है। यह वृक्ष सड़क मार्गों, कृषि भूमि, ओरण, गोचर, चारागाहों, सामुदायिक भवन परिसरों, धार्मिक परिसरों सहित सभी जगहों पर बहुतायत से पाया जाता है।
5. **वर्तमान स्थिति —** इस वृक्ष को सड़क किनारे वृक्षारोपण के लिए एवं शहरी वनीकरण के लिए अच्छी प्रजाति के रूप में माना जाता है। इसकी उपयोगिता को मध्य नजर रखते हुए राज्य सरकार की टी.ओ.एफ.आर. योजना में जिले में नीम प्रजाति के लगभग एक लाख पौधे तैयार करके आम जनता को वितरित किये गये हैं। जिले के खीमावत ट्रस्ट एवं अन्य संगठनों ने भी जिले के अधिकांश सड़क मार्गों पर वनीकरण के लिए नीम प्रजाति का चयन किया है।

6. **उपसंहार** :— नीम के औषधिय उपयोग एवं पर्यावरण के दृष्टिगत इसकी पौध तैयार करने हेतु नर्सरियों का विकास एवं सघन नीम वृक्षारोपण प्रस्तावित है।

पंच गौरव : एक जिला - एक खेल (बॉस्केटबॉल)



- 1. संबंधित विभाग** :— युवा मामलात एवं खेल विभाग पाली
- 2. नोडल अधिकारी** — खेल अधिकारी, पाली
- 3. पंच गौरव का संक्षिप्त परिचय** — पाली जिले में बॉस्केटबॉल खेल का समृद्ध इतिहास रहा है। मारवाड़ क्षेत्र के युवाओं में गति कौशल एवं शारीरिक कद-काठी, क्षमता की अनुकूलता को देखते हुये बॉस्केटबॉल खेल के खिलाड़ी भी बहुतायात में उपलब्ध हैं। नियमित प्रशिक्षण एवं इस खेल हेतु आवश्यक आधारभूत ढांचा उपलब्ध होने से खिलाड़ियों की व्यक्तिगत खेल कौशल क्षमता में वृद्धि हो रही है, जिससे उनके प्रदर्शन में निरन्तर सुधार हो रहा है। पाली जिले से पहला अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी सन् 1970–71 से रहा है, इसके पश्चात् निरन्तर पाली जिले में युवाओं ने बॉस्केटबॉल खेल में कई अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया है एवं मैडल प्राप्त किये हैं। वर्तमान में पाली जिले में 1500 से अधिक खिलाड़ी इस खेल में नियमित प्रशिक्षण ले रहे हैं। जिले में प्रतिवर्ष विद्यालय स्तरीय (जिला एवं राज्य स्तरीय) एवं बॉस्केटबॉल खेल संघ द्वारा भी बॉस्केटबॉल खेल प्रतियोगिताओं का नियमित आयोजन हो रहा है। साथ ही राष्ट्रीय स्तरीय बॉस्केटबॉल प्रतियोगिताओं के भव्य आयोजन का पाली जिला साक्षी रहा है। जिले में बॉस्केटबॉल के लगभग 50 आउटडोर खेल मैदान भी उपलब्ध हैं, ये तथ्य इस बात के घोतक हैं कि पाली जिला बॉस्केटबॉल खेल हेतु परिपूरित है।
- 4. जिले में उपलब्धि** — पाली जिले में बॉस्केटबॉल खेल की उल्लेखनीय उपलब्धियां रही हैं, जो निम्नानुसार हैं :—

- पाली जिले से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर 5 खिलाड़ी अपनी प्रतिभा प्रदर्शन कर चुके हैं।
- राष्ट्रीय स्तर पर 70 से अधिक खिलाड़ी भाग ले चुके हैं।
- राज्य स्तर पर 500 से अधिक खिलाड़ियों ने बॉस्केटबॉल में उल्लेखनीय प्रदर्शन करते हुये, पाली जिले एवं राज्य को गौरवान्वित किया हैं।
- यहाँ के खिलाड़ियों ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में डीआईजी रैंक में सर्विस करते हुये राष्ट्रीय सुरक्षा सेवा पुरस्कार प्राप्त किये हैं।
- कई खिलाड़ी रेल्वे, बी.एस.एफ., खेल प्रशिक्षक एवं शारिरीक शिक्षक तथा साथ ही शिक्षा विभाग में अपनी सेवाएं दे रहे हैं।
- जिले में बॉस्केटबॉल संघ, पाली टीम ने एवम् शिक्षा विभाग में राष्ट्रीय स्तर पर खेल आयोजित करते हुये राष्ट्रीय स्तर पर आयोजन व्यवस्था में द्वितीय रैंक प्राप्त की है।

5. वर्तमान स्थिति – बॉस्केटबॉल खेल में जिले में वर्तमान स्थिति निम्नानुसार है –

- जिले में खेल मैदान की उपलब्धता— पाली जिले में शहरी क्षेत्र में सरकारी स्कूलों, कॉलेजों एवं खेल विभाग के पास 18 बॉस्केटबॉल खेल के मैदान हैं, जिसमें 03 मैदान (01 खेल संकूल, पाली एवं 2 श्री बांगड़ स्कूल उ.मा.वि. पाली) फलड लाईट (LED LIGHT) व्यवस्था सहित उपलब्ध हैं। ग्रामीण क्षेत्र में भी पाली, सोजत, रानी, बाली, सुमेरपुर, मारवाड जंक्शन ब्लॉक में निजी एवं राजकीय विद्यालयों में भी उपलब्ध हैं।
- खेल प्रशिक्षण— पाली शहरी क्षेत्र में हाउसिंग बोर्ड, बांगड़ स्कूल, सेन्ट्रल एकेडमी, बांगड़ महाविद्यालय, खेल संकुल, एम.एस.कवाड स्कूल, रैनबॉ स्कूल, सेन्टपॉल स्कूल एवं बांगड़ स्टेडियम में पूर्ण सुविधाओं सहित खेल मैदान उपलब्ध हैं, जहां पर नियमित सत्रों में लगभग 400 बालक एवं बालिकाएं अभ्यास कर रहे हैं। साथ ही सीनीयर स्तर के 50 खिलाड़ीगण विभिन्न मैदानों पर अभ्यास करते हैं एवं प्रशिक्षण का कार्य भी करते हैं।

6. उपसंहार— पाली जिले में एक जिला—एक खेल में बॉस्केटबॉल को गौरव के रूप में स्थापित होने पर व्यापक रूप से इस खेल का जिले में प्रत्येक ब्लॉक स्तर पर प्रचार—प्रसार हो सकेगा। जिले में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में इस खेल की अभूतपूर्व प्रतिभाएं उपलब्ध हैं। प्रत्येक ब्लॉक स्तर पर बॉस्केटबॉल खेल मैदान, खेल सामग्री, खेल प्रशिक्षक एवं खेल इन्फ्रास्ट्रक्चर का निर्माण होगा तथा पाली जिले के खिलाड़ी वर्ष—पर्यन्त नियमित प्रशिक्षण प्राप्त करते हुये, राज्य, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पाली जिला एवं राज्य तथा राष्ट्र का नाम गौरवान्वित करेंगे। इस प्रकार पाली जिले की प्रत्येक प्रतिभा को पूर्ण रूप से तराशा जा सकेगा एवं पाली जिले को खिलाड़ी ओलम्पिक खेलों में प्रदर्शन के स्वर्ज को साकार कर सकेंगे।

पंच गौरव : एक जिला-एक पर्यटन स्थल (रणकपुर जैन मंदिर)



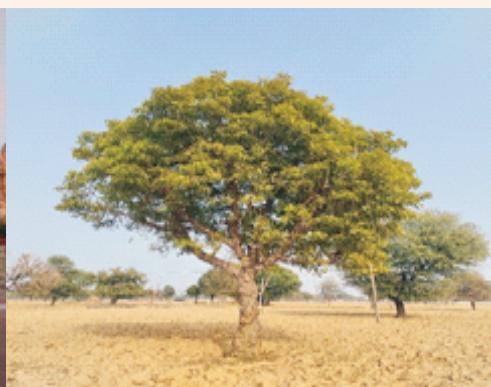
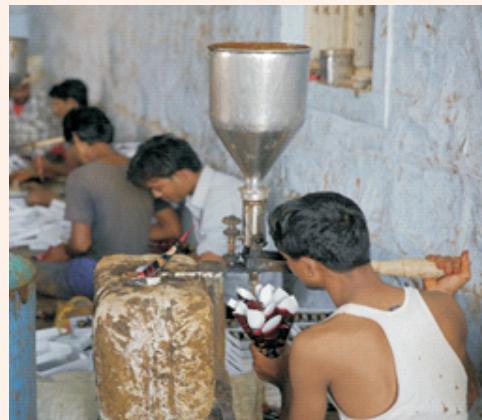
1. **संबंधित विभाग –** पर्यटन विभाग जोधपुर
2. **नोडल अधिकारी –** उपनिदेशक पर्यटन विभाग, पाली
3. **पंच गौरव का संक्षिप्त परिचय –** यह परिसर लगभग 40,000 वर्ग फीट में फैला हुआ है। करीब 600 वर्ष पूर्व 1946 विक्रम संवत में इस मंदिर का निर्माण कार्य प्रारम्भ हुआ था जो 50 वर्षों से अधिक समय तक चला। इसके निर्माण में करीब 99 लाख रुपए का खर्च आया था। मंदिर में चार कलात्मक प्रवेश द्वार हैं। मंदिर के मुख्य गृह में तीर्थकर आदिनाथ की संगमरमर से बनी चार विशाल मूर्तियां हैं। करीब 72 इंच ऊँची ये मूर्तियां चार अलग दिशाओं की ओर उन्मुख हैं। इसी कारण इसे चतुर्मुख मंदिर कहा जाता है। इसके अलावा मंदिर में 76 छोटे गुम्बदनुमा पवित्र स्थान, चार बड़े प्रार्थना कक्ष तथा चार बड़े पूजन स्थल हैं। ये मनुष्य को जीवन—मृत्यु की 84 लाख जीवयोनियों से मुक्ति प्राप्त कर मोक्ष प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते हैं। मंदिर के सैकड़ों स्तम्भ इसकी प्रमुख विशेषता हैं। इनकी संख्या 1444 है। जिस तरफ भी दृष्टि जाती है छोटे—बड़े आकारों के स्तम्भ दिखाई देते हैं, परंतु ये स्तम्भ इस प्रकार बनाए गए हैं कि कहीं से भी देखने पर मुख्य पवित्र स्थल के ‘दर्शन’ में बाधा नहीं पहुँचती है। इन स्तम्भों पर सुंदर नकाशी की गई है। अद्भुत वास्तुकला से परिपूर्ण इस मंदिर में सैकड़ों दर्शनार्थी प्रतिदिन आते हैं।

- जिले में उपलब्धि** – पाली जिले का महत्वपूर्ण पर्यटक स्थल है जो वास्तुकला के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यहां पर वर्ष 2024 में कुल 1695789 देशी पर्यटक एवं कुल 56439 विदेशी पर्यटक भ्रमण करने आए।
- वर्तमान स्थिति** – वर्तमान में यह मंदिर पाली जिले का सबसे अहम पर्यटक स्थल है जहां प्रतिवर्ष हजारों देशी एवं विदेशी पर्यटक भ्रमण पर आते हैं। वर्ष 2024 में कुल 1695789 देशी पर्यटक एवं कुल 56439 विदेशी पर्यटक भ्रमण करने आये हैं।



- उपसंहार**— रणकपुर जैन मंदिर पाली जिले का प्रमुख पर्यटन स्थल है। पाली आने वाले पर्यटक रणकपुर जैन मंदिर अवश्य आते हैं। वर्तमान सरकार की पंच गौरव योजना में चयनित होने उपरांत इस पर्यटन स्थल को पर्यटकों के लिए और ज्यादा विकसित किया जा सकेगा। हर वर्ष पर्यटन विभाग एवं जिला प्रशासन पाली द्वारा रणकपुर—जवाई बांध महोत्सव का आयोजन किया जाता है जिससे पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सकेगा।

पंच गौरव



संकलन वं सौजन्य

- पंच गौरव से संबंधित सभी विभाग – पाली
- आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग – पाली
- संयुक्त निदेशक, सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार विभाग, पाली – श्री राजेश कुमार चौधरी
- सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय— पाली